भारत सरकार
परमाणु ऊर्जा विभाग
24.07.2014 को राज्य सभा में
पूछा जाने वाला अतारांकित प्रश्न संख्या : 1677

कोल्लम में रेयर अर्थ्स

1677. श्री के. एन. बालगोपाल :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार के पास केरल के कोल्लम जिले में रेयर अर्थ्स के भण्डार संबंधी आंकड़े हैं, यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) उपरोक्त रेयर अर्थ्स में किन-किन खनिजों के अंश निहित हैं; और

(ग) क्या सरकार की मूल्य वर्धित उत्पादों हेतु रेयर अर्थ्स का उपयोग किए जाने की योजना है?

उत्तर

राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधान मंत्री कार्यालय (डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

(क) जी, हाँ। खनिज मोनाज़ाइट, जोकि भारत के तटीय क्षेत्रों के साथ-साथ पुलिन बालुका और इनलैंड प्लेसर निक्षेपों में पाया जाता है, देश में विरल मृदाओं का प्रमुख स्त्रोत है। परमाणु खनिज अन्वेषण तथा अनुसंधान निदेशालय (एएमडी), जोकि परमाणु ऊर्जा विभाग का एक संघटक यूनिट है ने, केरल के कोल्लम जिले में 0.892 मिलियन मीटरी टन मोनाज़ाइट स्त्रोतों का आकलन किया है। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है :

क्षेत्र	मोनाज़ाइट के स्वस्थाने स्त्रोत (मिलियन मीटरी टन)
चवारा	0.819
कन्नीमेल्सेरी-नींदकारा	0.023
इडावा-कोल्लम	0.050
कुल	0.892

(ख) केरल के कोल्लम जिले में पाए गए पुलिन बालुका खनिजों में विभिन्न स्थलों पर, मोनाज़ाइट की विद्यमान मात्रा 0.058% से लेकर 0.734% है। मोनाज़ाइट खनिज में, विशेष रूप से कुल विरल मृदा ऑक्साइड लगभग 55 - 60%, और थोरियम ऑक्साइड लगभग 9 - 10% होता है।

(ग) जी, हाँ। परमाणु ऊर्जा विभाग के अधीन एक सरकारी क्षेत्र के उपक्रम इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड (आईआरईएल) ने, मिश्रित विरल मृदा क्लोराइड का उत्पादन करने के लिए प्रतिवर्ष 10,000 मीटरी टन मोनाज़ाइट को संसाधित करने हेतु, उड़ीसा रेत सम्मिश्र (ऑस्कॉम), ओडिशा में एक मोनाज़ाइट संसाधन संयंत्र की स्थापना की है।

इसके अतिरिक्त, इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड ने, मिश्रित विरल मृदा क्लोराइड आरसीएल को संसाधित करने, और उच्च शुद्धता वाली पृथक्कृत विरल मृदाओं का उत्पादन करने के लिए, केरल में अलुवा स्थित विरल मृदा प्रभाग में अपना उच्च शुद्धता विरल मृदा संयंत्र पहले ही कमीशन कर दिया है।

इसके अतिरिक्त, इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड ने, विरल मृदा स्थायी चुम्बक रिंगों को तैयार करने के लिए, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बीएआरसी), रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल) तथा नई सामग्रियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय चूर्ण धातुकर्मिकी प्रगत अनुसंधान केन्द्र (एआरसीआई) के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

****